



સાલ-૧૪૩૧

Qazaa Namazon Ka Tariqa (Gujarati)

કજા નમાઝો કા તરીકા (૬-નફી)

ફજર

ઝોહર

અસ્ર

મગરિબ

ઈશા



શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તાત, બાલિયે ઘા'પતે હસ્તામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઈસ્વાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી

کتابستان
العسائریہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنَّ قَوْلَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ જો કુઇ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહુ ઇઝ્ઝુજ્ઝલ ! હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુરુગી વાલે। (المستطرف ج 1، إندالفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મઝિરત
13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



કઝા નમાઝોં કા તરીકા

યેહ રિસાલા (કઝા નમાઝોં કા તરીકા)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ને ઉદ્દે ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હે.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હે ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ, ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,

તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(१६-वर्क़ी)

क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा

शैतान लाभ रोक़े येह रिसाला (27 सफ़हात) मुकम्मल पढ
 लीजिये, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ, इस की ब-र-क़तें फ़ुद ही देष लेंगे.

दुइद शरीफ़ की इमीलत

दो ज़हां के सुल्तान, सरवरे जीशान, मलबूबे रलमान
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मग़िइरत निशान है : मुज़ पर दुइदे पाक
 पढना पुल सिरात पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ मुज़ पर 80 बार दुइदे पाक पढे
 उस के 80 साल के गुनाह मुआफ़ हो जायेंगे

(أَلْفَرَنْدُوسُ بِمَأْتُورِ الْخُطَابِ ج ٢ ص ٤٠٨ حَدِيث ٣٨١٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पारह 30 सू-रतुल माउिन की आयत नम्बर 4 और 5 में
 ईशाद़ होता है :

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ
 عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ
 तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : तो उन
 नमाज़ियों की भराबी है जो अपनी
 नमाज़ से बूले बैठे हैं.

मुइस्सिरे शहीर, डकीमुल उम्मत, डज़रते मुइती अलमद यार
 पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ सू-रतुल माउिन की आयत नम्बर 5 के तइत इरमाते

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दूड़ दे पाक पढा अदवाइ उस पर दस रइमतें बेजता है. (स्)

हैं : नमाज से भूलने की यन्द् सूरतें हैं : कल्मी न पढना, पाबन्दी से न पढना, सडीह वक्त पर न पढना, नमाज सडीह तरीके से अदा न करना, शौक से न पढना, समज भूज कर अदा न करना, कसल व सुस्ती, बे परवाઈ से पढना. (नूरुल ईरफान, स. 958)

जहन्नम की भौइनाक वादी

सदरुशशरीअह, अदरुत्तरीकह, हजरते भौलाना मुहम्मद अमजद अली आ'जमी الْقَوِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوِي इरमाते हैं : जहन्नम में वैल नामी अक भौइनाक वादी है जिस की सप्ती से भुद जहन्नम ली पनाह मांगता है. ज्ञान भूज कर नमाज कजा करने वाले उस के मुस्तहिक हैं.

(अहारे शरीअत, जि. 1, स. 347 मुलम्भसन)

पहाड गरमी से पिघल जअें

हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन अहमद ज-हबी الْقَوِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوِي इरमाते हैं : कहा गया है के जहन्नम में अक वादी है जिस का नाम वैल है, अगर उस में दुन्या के पहाड डाले जअें तो वोह ली उस की गरमी से पिघल जअें और येह उन लोगों का ठिकाना है जे नमाज में सुस्ती करते और वक्त के बा'द कजा कर के पढते हैं मगर येह के वोह अपनी कोताही पर नादिम हों और बारगाहे भुदा वन्दी में तौबा करें.

(كِتَابُ الْكَبَائِرِ ص 19)

सर कुयलने की सजा

सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्मा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाअे किराम الرضوان عَلَيْهِمُ الرضوان से इरमाया : आज रात दो शप्स (या'नी जिब्राईल السَّلَامُ عَلَيْهِ और मीकाईल السَّلَامُ عَلَيْهِ) मेरे पास आअे

इरमाने मुस्तका : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (جزائري) गया।

और मुझे अर्जें मुकदसा में ले आये. मैं ने देखा के अेक शप्स लैटा है और उस के सिरहाने अेक शप्स पथ्थर उठाये जडा है और पै दूर पै पथ्थर से उस का सर कुयल रहा है, हर बार कुयलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है. मैं ने फिरिशतों से कहा : **يَعْلَى سُبْحَانَ اللَّهِ** कौन है? उन्होंने ने अर्ज की : आगे तशरीफ़ ले यलिये (मजीद मनाजिर दिवाने के बा'द) फिरिशतों ने अर्ज की के : पडला शप्स जो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने देखा येड वोड था जिस ने कुरआन पढा फिर उस को छोड दिया था और इर्ज नमाजों के वक्त सो जाता था इस के साथ येड भरताव कियामत तक डोगा. (بخاری ج ٤ ص ٦٨ ٤٦٠ ٤٦١ ٧٠٤٧٠ ٧٠٤٧١ مُلَخَّصًا)

हजारों भरस के अजाब का हकदार

भेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा भान **رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** इतावा र-अविय्या जिल्द 9 सईडा 158 ता 159 पर इरमाते हैं : जिस ने कस्दन अेक वक्त की (नमाज) छोडी हजारों भरस जहन्नम में रहने का मुस्तहिक हुवा, जब तक तौबा न करे और उस की कजा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की जिन्दगी में उसे यक-लप्त छोड दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो जरूर वोड इस का सजावार है. अद्लाह तआला इरमाता है :

وَأَمَّا يُسِئِنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ

الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٧٠﴾

(پ ٧ الانعام: ٦٨)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और जो कहीं तुजे शैतान भुलावे तो याद आये पर जालिमों के पास न बैठ.

इरमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तउकीक
 वोह बढ भप्त हो गया. (ق. ۱)

कध्र में आग के शो'ले

अेक शअ्स की बहन फ़ौत हो गई. जब उसे दइन कर के लौटा तो याद आया के रकम की थेली कध्र में गिर गई है युनान्चे कध्रिस्तान आ कर थेली निकालने के लिये उस ने अपनी बहन की कध्र भोद डाली ! अेक हिल खिला देने वाला मन्जर उस के सामने था, उस ने देभा के बहन की कध्र में आग के शो'ले लउक रडे हैं ! युनान्चे उस ने जू तू कध्र पर भिड़ी डाली और सदमे से यूर यूर रोता हुआ मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजन ! मेरी बहन के आ'माल कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अर्ज की : "मैं ने अपनी बहन की कध्र में आग के शो'ले लउकते देभे हैं." येह सुन कर मां ली रोने लगी और कहा : "अइसोस ! तेरी बहन नमाज में सुस्ती किया करती थी और नमाज कजा कर के पढा करती थी."

(کتابُ الْکِبْرِ ص ۲۶)

भीठे भीठे ईस्वामी लार्थयो ! जब कजा करने वालों की औसी औसी सप्त सजाअें हैं तो जो बढ नसीब सिरे से नमाज ही नहीं पढते उन का क्या अन्जाम होगा !

अगर नमाज पढना भूल जाये तो.....?

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सभावत सरापा रहमत. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : जो नमाज से सो जाये या भूल जाये तो जब याद आये पढ ले, के वोही उस का वक्त है. (مسلم ص ۳۴۶ حدیث ۶۸۴)

हु-कहाये किराम. اللَّهُ سَلَامُ رَحْمَتُهُمْ इरमाते हैं : सोते में या भूले से नमाज कजा हो गई तो उस की कजा पढनी इर्ज है अलबत्ता कजा का

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा
उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अल-मुस्तफ़ा)

गुनाह उस पर नहीं मगर बेदार होने और याद आने पर अगर वक्ते
मक़रुह न हो तो उसी वक्त पढ ले ताभीर मक़रुह है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 701)

घत्तिफ़ाकन आंभ न फुली तो.....?

इतावा र-अविय्या में है : ❁ जब जाने, के अब सोया तो नमाज
जाती रहेगी उस वक्त सोना हलाल नहीं मगर जब के किसी जगा देने
वाले पर अ'तिमाह हो ❁ जैसे वक्त में सोया के आदतन वक्त में
आंभ फुल जाती और घत्तिफ़ाकन न फुली तो गुनहगार नहीं.

(इवाइदे जलीला इतावा र-अविय्या, जि. 4, स. 698)

मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?

आंभ न फुलने की वजह से नमाजे इज्ज "कजा" हो जाने की
सूरत में "अदा" का सवाब मिलेगा या नहीं. इस ज़िम्न में मेरे आका
आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल ब-र-कत,
अज़ीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,
हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे
भैरो ब-र-कत, इमामे ईशको महुब्बत, हज़रते अद्वामा मौलाना अलहाज
अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن
इतावा र-अविय्या जिह्द 8 सफ़हा 161 पर इरमाते हैं : रहा अदा का
सवाब मिलना येह अद्वालुह ज़ुज्र के इप्तियार में है. अगर वोह
जानेगा के इस ने अपनी जानिब से कोई तकसीर (कोताही) न की, सुब्ह
तक जागने के कस्द से बैठा था और बे इप्तियार आंभ लग गई तो
ज़रूर उस पर गुनाह नहीं. रसूलुद्वालुह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं :

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : جس کے پاس میرا ٹیک لڑھا اور اُس نے مُوْز پر دُرُود شَرِیْف نہ پڑھا اُس نے جُکّا کِی. (مہاراجن)

નીંદ કી સૂરત મેં કોતાહી નહીં, કોતાહી ઉસ શપ્સ કી હે જો (જાગતે મેં) નમાઝ ન પઢે હતા કે દૂસરી નમાઝ કા વક્ત આ જાએ. (مُسْلِم ص ۳۴۴ حدیث ۶۸۱)

રાત કે આખિરી હિસ્સે મેં સોના કેસા ?

નમાઝ કા વક્ત દાખિલ હો જાને કે બા'દ સો ગયા ફિર વક્ત નિકલ ગયા ઓર નમાઝ કઝા હો ગઈ તો કત્અન ગુનહગાર હુવા જબ કે જાગને પર સહીહ એ'તિમાદ યા જાગને વાલા મૌજૂદ ન હો બલકે ફજ મેં દુખૂલે વક્ત સે પહલે ભી સોને કી ઈજાઝત નહીં હો સકતી જબ કે અક્સર હિસ્સા રાત કા જાગને મેં ગુઝરા ઓર ઝન્ને ગાલિબ હે કે અબ સો ગયા તો વક્ત મેં આંખ ન ખુલેગી. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 701)

રાત દેર તક જાગના

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ના'ત ખ્વાનિયોં, ઝિકો ફિક કી મહફિલોં નીઝ સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆત વગૈરા મેં રાત દેર તક જાગને કે બા'દ સોને કે સબબ અગર નમાઝે ફજ કઝા હોને કા અન્દેશા હો તો બ નિચ્ચતે એ'તિકાફ મસ્જિદ મેં કિયામ કરેં યા વહાં સોએં જહાં કોઈ કાબિલે એ'તિમાદ ઈસ્લામી ભાઈ જાગને વાલા મૌજૂદ હો. યા અલામ વાલી ઘડી હો જિસ સે આંખ ખુલ જાતી હો મગર એક અદદ ઘડી પર ભરોસા ન કિયા જાએ કે નીંદ મેં હાથ લગ જાને સે યા યૂં હી ખરાબ હો કર બન્દ હો જાને કા ઈમ્કાન રહતા હે, દો યા હસ્બે ઝરૂરત ઝાઈદ ઘડિયાં હોં તો બેહતર હે. ફુ-કહાએ કિરામ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ફરમાતે હેં : “જબ યેહ અન્દેશા હો, કે સુબહ કી નમાઝ જાતી રહેગી તો બિલા ઝરૂરતે શરઈચ્યા ઉસે રાત દેર તક જાગના મમ્નૂઅ હે.” (رَدُّ الْمُنْتَحَرَج ۲ ص ۳۳)

કરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (ક્રામલ)

અદા, કઝા ઓર વાજિબુલ ઘઆદા કી તા'રીફ

જિસ ચીઝ કા બન્દોં કો હુકમ હૈ ઉસે વક્ત મેં બજા લાને કો અદા કહતે હૈં ઓર વક્ત ખત્મ હોને કે બા'દ અમલ મેં લાના કઝા હૈ ઓર અગર ઉસ હુકમ કે બજા લાને મેં કોઈ ખરાબી પૈદા હો જાએ તો ઉસ ખરાબી કો દૂર કરને કે લિયે વોહ અમલ દોબારા બજા લાના ઈઆદા કહલાતા હૈ. વક્ત કે અન્દર અન્દર અગર તહરીમા બાંધ લી તો નમાઝ કઝા ન હુઈ બલકે અદા હૈ. (دُرُومُخْتَار ج ۲ ص ۱۲۷-۱۲۲) મગર નમાઝે ફજ, જુમુઆ ઓર ઈદૈન મેં વક્ત કે અન્દર સલામ ફિરના લાઝિમી હૈ વરના નમાઝ ન હોગી. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 701) બિલા ઉઝરે શર-ઈ નમાઝ કઝા કર દેના સપ્ત ગુનાહ હૈ, ઈસ પર ફર્ઝ હૈ કે ઉસ કી કઝા પઢે ઓર સચ્ચે દિલ સે તૌબા ભી કરે, તૌબા યા હજજે મકબૂલ સે إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ તાખીર કા ગુનાહ મુઆફ હો જાએગા (دُرُومُخْتَار ج ۲ ص ۱۲۶) તૌબા ઉસી વક્ત સહીહ હૈ જબ કે કઝા પઢ લે ઉસ કો અદા કિયે બિગૈર તૌબા કિયે જાના તૌબા નહીં, કે જો નમાઝ ઈસ કે ઝિમ્મે થી ઉસ કો ન પઢના તો અબ ભી બાકી હૈ ઓર જબ ગુનાહ સે બાઝ ન આયા તો તૌબા કહાં હુઈ ?

(رَدُّ الْمُخْتَار ج ۲ ص ۱۲۷)

હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્ને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا સે રિવાયત હૈ, તાજદારે રિસાલત, શહન્શાહે નુબુવ્વત, પૈકરે જૂદો સખાવત, સરાપા રહમત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદિ ફરમાયા : ગુનાહ પર કાઈમ રહ કર તૌબા કરને વાલા ઉસ કી મિસ્લ હૈ જો અપને રબ عَزَّوَجَلَّ સે ઠઠ્ઠા (યા'ની મઝાક) કરતા હૈ.

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۵ ص ۴۳۶ حدیث ۷۱۷۸)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : मुझ पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابو یونس)

તૌબા કે તીન રુક્ન હૈં

સદરુલ અફઝિલ હઝરતે અલ્લામા સય્યિદ મુહમ્મદ નઈમુદીન મુરાદઆબાદી رحمة الله الهادي ફરમાતે હૈં : “તૌબા કે તીન રુક્ન હૈં : ﴿1﴾ એ’તિરાફે જુર્મ ﴿2﴾ નદામત ﴿3﴾ અઝ્મે તર્ક (યા’ની ઈસ ગુનાહ કો છોડને કા પુખ્તા અહ્દ). અગર ગુનાહ કાબિલે તલાફી હૈ તો ઉસ કી તલાફી ભી લાઝિમ. મ-સલન તારિકે સલાત (યા’ની નમાઝ તર્ક કર દેને વાલે) કી તૌબા કે લિયે નમાઝોં કી કઝા ભી લાઝિમ હૈ.” (ખઝાઈનુલ ઈરફાન, સ. 12)

સોતે કો નમાઝ કે લિયે જગાના વાજિબ હૈ

કોઈ સો રહા હૈ યા નમાઝ પઢના ભૂલ ગયા હૈ તો જિસે મા’લૂમ હૈ ઉસ પર વાજિબ હૈ કે સોતે કો જગા દે ઔર ભૂલે હુએ કો યાદ દિલા દે. (વરના ગુનહગાર હોગા) (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 701) યાદ રહે ! જગાના યા યાદ દિલાના ઉસ વક્ત વાજિબ હોગા જબ કે ઝન્ને ગાલિબ હો કે યેહ નમાઝ પઢેગા વરના વાજિબ નહીં.

ફજ કા વક્ત હો ગયા ઉઘો !

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ખૂબ સદાએ મદીના લગાઈયે યા’ની સોને વાલોં કો નમાઝ કે લિયે જગાઈયે ઔર ઢેરોં નેકિયાં કમાઈયે. દા’વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં ફજ કે લિયે મુસલમાનોં કો જગાના સદાએ મદીના લગાના કહલાતા હૈ, સદાએ મદીના વાજિબ નહીં, નમાઝે ફજ કે લિયે જગાના કારે સવાબ હૈ જો હર મુસલમાન કો હસ્બે મૌકઅ કરના યાહિયે. સદાએ મદીના લગાને મેં ઈસ બાત કી એહતિયાત ઝરૂરી હૈ કે કિસી મુસલમાન કો ઈઝા ન હો.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो के तुम्हारा दुरुद मुज तक
पहोंयता है. (प्र. 1)

હિકાયત

એક ઈસ્લામી ભાઈ ને મુઝે (સગે મદીના عَنْهُ કો) બતાયા થા હમ ચન્દ ઈસ્લામી ભાઈ મેગાફોન પર ફજ કે વક્ત સદાએ મદીના લગાતે હુએ એક ગલી સે ગુઝરે. એક સાહિબ ને હમ કો ટોકા ઔર કહા કે મેરા બચ્યા રાત ભર નહીં સોયા અભી અભી આંખ લગી હૈ આપ લોગ મેગાફોન બન્દ કર દીજિયે. હમ કો ઉન સાહિબ પર બડા ગુસ્સા આયા કે ન જાને કેસા મુસલ્માન હૈ, હમ નમાઝ કે લિયે જગા રહે હૈં ઔર યેહ ઈસ નેક કામ મેં રુકાવટ ડાલ રહા હૈ ! ખૈર દૂસરે દિન હમ ફિર સદાએ મદીના લગાતે હુએ ઉસ તરફ જા નિકલે તો વોહી સાહિબ પહલે સે ગલી કે નુક્કડ પર ગમઝદા ખડે થે ઔર હમ સે કહને લગે : આજ ભી બચ્યા સારી રાત નહીં સોયા અભી અભી આંખ લગી હૈ ઈસી લિયે મેં યહાં ખડા હો ગયા તાકે હમારી ગલી સે ખામોશી સે ગુઝરને કી આપ હઝરાત કી ખિદમાત મેં દર-ખ્વાસ્ત કરું. ઈસ સે મા'લૂમ હુવા કે બિગૈર મેગાફોન કે સદાએ મદીના લગાઈ જાએ. નીઝ બિગૈર મેગાફોન કે ભી ઈસ કદર બુલન્દ આવાઝેં ન નિકાલી જાએં જિસ સે ઘરોં મેં નમાઝ વ તિલાવત મેં મશગૂલ ઈસ્લામી બહનોં, ઝઈફોં, મરીઝોં ઔર બચ્યોં કો તશ્વીશ હો યા જો અવ્વલ વક્ત મેં પઢ કર સો રહા યા સો રહી હો ઉસ કી નીંદ મેં ખલલ પડે. ઔર અગર કોઈ મુસલ્માન અપને ઘર કે પાસ સદાએ મદીના લગાને સે રોકે તો ઉસ સે ઝિદ બહ્સ કરને કે બજાએ ઉસ સે મુઆફી માંગ લી જાએ ઔર ઉસ પર હુસ્ને ઝન રખા જાએ કે યકીનન

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَسَى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَاللَّهُ يَوْمَهُمْ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो
रहमतें नाज़िल फ़रमाता है. (प्रा.)

કોઈ મુસલમાન નમાઝ કે લિયે જગાને કા મુખાલિફ નહીં હો સકતા, ઉસ બિચારે કી કોઈ મજબૂરી હોગી. બિલફઝ વોહ બે નમાઝી હો તો ભી આપ ઉસ પર સખ્તી કરને કે મજાઝ નહીં, કિસી મુનાસિબ વક્ત પર ઈન્તિહાઈ નરમી કે સાથ ઈન્ફિરાદી કોશિશ કે ઝરીએ ઉસ કો નમાઝ કે લિયે આમાદા કીજિયે. મસાજિદ મેં ભી અઝાને ફજ વગૈરા કે ઈલાવા બે મૌકઅ નીઝ મહલ્લોં યા મકાનોં કે અન્દર મહાફિલે ના'ત વગૈરા મેં સ્પીકર ઈસ્તિ'માલ કરને વાલોં કો ભી અપને અપને ઘરોં મેં ઈબાદત કરને વાલોં, મરીઝોં, શીર ખ્વાર બચ્ચોં ઔર સોને વાલોં કી ઈઝા કો પેશે નઝર રખના ચાહિયે.

હુકૂકે આમ્મા કે એહસાસ કી હિકાયત

હુકૂકે આમ્મા કા ખયાલ રખના બહુત ઝરૂરી હૈ, હમારે અસ્લાફ ઈસ મુઆ-મલે મેં બેહદ મોહતાત હુવા કરતે થે. યુનાન્થે હુજજતુલ ઈસ્લામ હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં : હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ અહમદ બિન હમ્બલ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કી ખિદમત મેં એક શખ્સ કઈ સાલ સે હાઝિર હોતા ઔર ઈલ્મ હાસિલ કરતા. એક બાર જબ આયા તો આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને ઉસ સે મુંહ ફેર લિયા. ઉસ કે બ ઈસરાર ઈસ્તિફસાર પર ફરમાયા : અપને મકાન કી દીવાર કે સડક વાલે કોને પર ગારા લગા કર કદે આદમ (યા'ની ઈન્સાની કદ) કે બરાબર ઉસ (કોને) કો તુમ ને આગે બઢા દિયા હૈ હાલાં કે વોહ મુસલમાનોં કી ગુઝર ગાહ હૈ. યા'ની મેં તુમ સે કેસે ખુશ હો સકતા હૂં કે તુમ ને મુસલમાનોં કા રાસ્તા તંગ કર

करमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (त्रिभुजा)

दिया है ! (احياء العلوم ج ١ ص ٩٦ مُفَصَّلًا) यहां वोह लोग भी ईध्रत हासिल करें जो अपने घरों के बाहर जैसे यबूतरे वगैरा बना देते हैं जिस से मुसल्मानों का रास्ता तंग हो जाता है.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जल्द से जल्द कजा पढ लीजिये

जिस के जिम्मे कजा नमाजें हों उन का जल्द से जल्द पढना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरियात की इरादमी के सबब तापीर ज़रूर है. लिहाजा कारोबार भी करता रहे और इरसत का जो वक्त मिले उस में कजा पढता रहे यहां तक के पूरी हो जायें.

(دُرِّمُخْتَار ج ٢ ص ٦٤٦)

छुप कर कजा पढिये

कजा नमाजें छुप कर पढिये लोगो पर (या घर वालों बल्के करीबी दोस्त पर भी) इस का ईजहार न कीजिये (म-सलन येह मत कहा कीजिये के मेरी आज की इज कजा हो गई या मैं कजाये उम्री पढ रहा हूं वगैरा), के गुनाह का ईजहार भी मक़रूहे तहरीमी व गुनाह है. (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٢ ص ٦٠٠) लिहाजा अगर लोगो की भौजू-दगी में वित्र कजा पढें तो तकबीरे कुनूत के लिये हाथ न उठायें.

जुमुअतुल वदाअ में कजाये उम्री

र-मजानुल मुबारक के आबिरी जुमुआ में आ'ज लोग आ जमाअत कजाये उम्री पढते हैं और येह समजते हैं के उम्र त्तर की

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज़ पर हुज़दे पाक न पड़े. (म०)

क़ज़ाअें ईसी अेक नमाज़ से अदा हो गंई येह बातिल महुज़ है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 708)

उम्र भर की क़ज़ा का हिसाब

जिस ने क़बी नमाज़ें ही न पढी हों और अब तौफ़ीक हुई और क़ज़ाअे उम्री पढना याहता है वोह जब से बालिग हुवा है उस वक्त से नमाज़ों का हिसाब लगाअे और तारीखे बुलूग़ भी नहीँ मा'लूम तो अेहतियात ईसी में है के हिजरी सिन के हिसाब से औरत नव साल की उम्र से और मर्द बारह साल की उम्र से नमाज़ों का हिसाब लगाअे.

क़ज़ा पढने में तरतीब

क़ज़ाअे उम्री में यूं भी कर सकते हैं के पहले तमाम इज्जें अदा कर लें फिर तमाम जोहूर की नमाज़ें ईसी तरह अस्र, मगरिब और ईशा.

क़ज़ाअे उम्री का तरीका (ह-नई)

क़ज़ा हर रोज़ की बीस रकअतें होती हैं. दो इर्ज इज्ज के, यार जोहूर, यार अस्र, तीन मगरिब, यार ईशा के और तीन वित्र. निख्यत ईस तरह कीजिये, म-सलन : “सब से पहली इज्ज जो मुज़ से क़ज़ा हुई उस को अदा करता हूं.” हर नमाज़ में ईसी तरह निख्यत कीजिये. जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह आसान्नी के दिये अगर यूं भी अदा करे तो जाईज है के हर रुकूअ और हर सजदे में तीन तीन बार “سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى” की जगह सिर्फ़ अेक अेक बार कहे. मगर येह हमेशा और हर तरह की नमाज़ में याद रभना याहिये

કરમાને મુસ્તફા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइटे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़रामात)

કે જબ રુકૂઅ મેં પૂરા પહોંચ જાએ ઉસ વક્ત **سُبْحَن** કા “સીન” શુરૂઅ કરે ઔર જબ **عَظِيم** કા “મીમ” ખત્મ કર ચુકે ઉસ વક્ત રુકૂઅ સે સર ઉઠાએ. ઈસી તરહ સજદે મેં ભી કરે. એક તખ્ફીફ (યા’ની કમી) તો યેહ હુઈ ઔર દૂસરી યેહ કે ફર્જોં કી તીસરી ઔર ચૌથી રક્અત મેં અલ હમ્દ શરીફ કી જગહ ફકત “**سُبْحَانَ اللَّهِ**” તીન બાર કહ કર રુકૂઅ કર લે. મગર વિત્ર કી તીનોં રક્અતોં મેં અલ હમ્દ શરીફ ઔર સૂરત દોનોં ઝરૂર પઢી જાએ. તીસરી તખ્ફીફ (યા’ની કમી) યેહ કે કા’દએ અખીરા મેં તશહહુદ યા’ની અત્તહિયાત કે બા’દ દોનોં દુરૂદોં ઔર દુઆ કી જગહ સિફ “**اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ**” કહ કર સલામ ફેર દે. ચૌથી તખ્ફીફ (યા’ની કમી) યેહ કે વિત્ર કી તીસરી રક્અત મેં દુઆએ કુનૂત કી જગહ **اللَّهُ أَكْبَرُ** કહ કર ફકત એક બાર યા તીન બાર “**رَبِّ اغْفِرْ لِي**” કહે. (મુલખ્ખસ અઝ ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 8, સ. 157) યાદ રખિયે ! તખ્ફીફ (યા’ની કમી) કે ઈસ તરીકે કી આદત હરગિઝ ન બનાઈયે, મા’મૂલ કી નમાઝોં સુન્નત કે મુતાબિક હી પઢિયે ઔર ઈન મેં ફરાઈઝ વ વાજિબાત કે સાથ સાથ સુનન ઔર મુસ્તહબ્બાત વ આદાબ કી ભી રિઆયત કીજિયે.

નમાઝો કસર કી કઝા

અગર હાલતે સફર કી કઝા નમાઝ હાલતે ઈકામત મેં પઢેંગે તો કસર હી પઢેંગે ઔર હાલતે ઈકામત કી કઝા નમાઝ હાલતે સફર મેં પઢેંગે તો પૂરી પઢેંગે યા’ની કસર નહીં કરેંગે. (عالمگیری ج ۱ ص ۱۲۱)

इरमाने मुस्तक़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़िरत है. (भा. ११)

और करे तो इज़ व अस्र के बा'द न पढे और तमाम रकअतें (भरी पढे और वित्र में कुनूत पढ कर तीसरी के बा'द का'दा कर के, फिर अेक और मिलाअे के यार हो ज़ां.

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۲۴)

क़ज़ा का लज़ज़ कहना भूल गया तो ?

आ'ला हज़रत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ इरमाते हैं : हमारे उ-लमा तसरीह इरमाते हैं : क़ज़ा भ निच्यते अदा और अदा भ निच्यते क़ज़ा दोनों सहीह हैं.

(इतावा २-अविख्या मुभरज़, जि. 8, स. 161)

क़ज़ा नमाज़ें नवाज़िल की अदाअेगी से बेहतर

“इतावा शामी” में है : क़ज़ा नमाज़ें नवाज़िल की अदाअेगी से बेहतर और अहम हैं मगर सुन्नते मुअक्कदा, नमाज़े याशत, सलातुत्तस्बीह और वोह नमाज़ें जिन के बारे में अडादीसे मुभा-रका मरवी हैं या'नी जैसे तडिय्यतुल मस्जिद, अस्र से पडले की यार रकअत (सुन्नते गैर मुअक्कदा) और मगरिभ के बा'द ए⁶ रकअतें (पढी ज़ांगी). (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۲ ص ۱۶۶) याद रहे ! क़ज़ा नमाज़ की बिना पर सुन्नते मुअक्कदा एरोडना ज़ांज़ नही, अलभत्ता सुन्नते गैर मुअक्कदा और हदीसों में वारिद शुदा मप्सूस नवाज़िल पढे तो सवाभ का हकदार है मगर एन्हें न पढने पर कोई गुनाह नही, याहे ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ हो या न हो.

इज़ व अस्र के बा'द नवाज़िल नहीं पढ सकते

नमाज़े इज़ और अस्र के बा'द वोह तमाम नवाज़िल अदा

કરમાને મુસ્તફા ﷺ: જો મુઝ પર એક દુરૂદ શરીફ પઢતા હે અલ્લાહ ઁઝલ ઉસ કે લિયે એક કીરાત
અજ લિખતા હે ઔર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હે. (મુબારક)

કરને મકરૂહે (તહરીમી) હેં જો કસ્દન હોં અગર્યે તહિય્યતુલ મસ્જિદ હોં, ઔર હર વોહ નમાઝ (ભી નહીં પઢ સકતે) જો ગૈર કી વજહ સે લાઝિમ હો મ-સલન નઝર ઔર તવાફ કે નવાફિલ ઔર હર વોહ નમાઝ જિસ કો શુરૂઅ કિયા ફિર ઉસે તોડ ડાલા, અગર્યે વોહ ફજા ઔર અસ્ર કી સુન્નતેં હી ક્યૂં ન હોં. (દરૂમુત્તાર ૨, ૬૬-૬૦)

કઝા કે લિયે કોઈ વક્ત મુઅય્યન નહીં ઉમ્ર મેં જબ (ભી) પઢેગા બરિયુઝ્ઝિમ્મા હો જાએગા. મગર તુલૂઅ વ ગુરૂબ ઔર ઝવાલ કે વક્ત નમાઝ નહીં પઢ સકતા, કે ઈન વક્તોં મેં નમાઝ જાઈઝ નહીં.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 702, ૦૨, ૧૬૫)

ઝોહર કી ચાર સુન્નતેં રહ જાએં તો કયા કરે ?

અગર ઝોહર કે ફર્ઝ પહલે પઢ લિયે તો દો રક્અત સુન્નતે બા'દિયા અદા કરને કે બા'દ ચાર રક્અત સુન્નતે કબ્લિયા અદા કીજિયે યુનાન્યે સરકારે આ'લા હઝરત رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હેં : ઝોહર કી પહલી ચાર સુન્નતેં જો ફર્ઝ સે પહલે ન પઢી હોં તો બા'દે ફર્ઝ બલકે મઝહબે અરજહ (યા'ની પસન્દીદા તરીન મઝહબ) પર બા'દ (દો રક્અત) સુન્નતે બા'દિયા કે પઢેં બશર્તે કે હુનૂઝ (યા'ની અભી) વક્તે ઝોહર બાકી હો.

(ફતાવા ર-ઝવિયા મુબર્રજા, જિ. 8, સ. 148)

ફજા કી સુન્નતેં રહ જાએં તો કયા કરે ?

સુન્નતેં પઢને સે અગર ફજા કી જમાઅત ફૌત હો જાને કા અન્દેશા હો તો બિગૈર પઢે શામિલ હો જાએ. મગર સલામ ફેરને કે બા'દ પઢના

ફરમાને મુસ્તકા عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જિસ ને કિતાબ મેં મુઝ પર દુરૂદે પાક લિખા તો જબ તક મેરા નામ ઉસ મેં રહેગા ફિરિશ્તે ઉસ કે લિયે ઈસ્તિફકાર કરતે રહેંગે. (પ્રૃ. ૧)

જાઈઝ નહીં. તુલૂએ આફતાબ કે કમ અઝ કમ બીસ મિનટ બા'દ સે લે કર ઝહૂવએ કુખ્રા તક પઢ લે, કે મુસ્તહબ હૈ. ઈસ કે બા'દ મુસ્તહબ ભી નહીં.

કયા મગરિબ કા વક્ત થોડા સા હોતા હૈ ?

મગરિબ કી નમાઝ કા વક્ત ગુરૂબે આફતાબ તા ઈબ્તિદાએ વક્તે ઈશા હોતા હૈ. યેહ વક્ત મકામાત ઓર તારીખ કે એ'તિબાર સે ઘટતા બઢતા રહતા હૈ મ-સલન બાબુલ મદીના કરાયી મેં નિઝામુલ અવકાત કે નકશે કે મુતાબિક મગરિબ કા વક્ત કમ અઝ કમ એક ઘન્ટા 18 મિનટ હોતા હૈ. ફુ-કહાએ કિરામ رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ફરમાતે હૈં : રોઝે અબ્ર (યા'ની જિસ દિન બાદલ છાએ હોં ઉસ) કે સિવા મગરિબ મેં હમેશા તા'જીલ (યા'ની જલ્દી) મુસ્તહબ હૈ ઓર દો રક્અત સે ઝાઈદ કી તાખીર મકરૂહે તન્જીહી ઓર અગર બિગૈર ઊઝર સફર વ મરઝ વગૈરા ઈતની તાખીર કી કે સિતારે ગુથ ગએ તો મકરૂહે તહરીમી.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 453)

સરકારે આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં : ઈસ (યા'ની મગરિબ) કા વક્તે મુસ્તહબ જબ તક હૈ કે સિતારે ખૂબ ઝાહિર ન હો જાએ, ઈતની દેર કરની કે (બડે બડે સિતારોં કે ઈલાવા) છોટે છોટે સિતારે ભી ચમક આએ મકરૂહ હૈ. (ફતાવા ર-અવિયા મુખર્રજ, જિ. 5, સ. 153) અસ્ર વ ઈશા સે પહલે જો રક્અતે હૈં વોહ સુન્નતે ગૈર મુઅક્કદા હૈં ઉન કી કઝા નહીં.

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर अक़ बार दुरुद पाक पढा अल्लाह उस पर दस रक़मतों भेजता है. (स्लम)

तरावीह की क़ज़ा का क्या हुक़म है ?

जब तरावीह फ़ौत हो जाये तो उस की क़ज़ा नहीं, न ज़माअत से न तन्हा और अगर कोई क़ज़ा पढ भी लेता है तो येह जुदागाना नफ़ल हो जायेगा, तरावीह से एन का तअद्लुक न होग़ा.

(تنويرُ الأبصارِ ودرُ مختار ج ٢ ص ٥٩٨)

नमाज़ का फ़िदया

जिन के रिश्तेदार फ़ौत हुअे हों वोह

एस मज़भून का ज़रूर मुता-लया इरमाअें

मय्यित की उअ्र मा'लूम कर के एस में से नव साल औरत के लिये और बारह साल मर्द के लिये ना बादिगी के निकाल दीजिये. बाकी जितने साल बचे उन में हिसाब लगाएये के कितनी मुदत तक वोह (या'नी मर्हूम) बे नमाज़ी रहा या बे रोज़ा रहा, या कितनी नमाज़ें या रोज़े उस के ज़िम्मे क़ज़ा के बाकी हैं. ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये बल्के याहें तो ना बादिगी की उअ्र के बा'द अक़िया तमाम उअ्र का हिसाब लगा लीजिये. अब ई नमाज़ अक़ अक़ स-द-क़अे इत्र भैरात कीजिये. अक़ स-द-क़अे इत्र की भिकदार 2 क़िलो से 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है. और अक़ दिन की ९^० नमाज़ें हैं पांय इर्ज़ और अक़ वित्र वाजिब. म-सलन 2 क़िलो से 80 ग्राम कम गेहूं की रक़म 12 रुपै हो तो अक़ दिन की नमाज़ों के 72 रुपै हुअे और 30 दिन के 2160 रुपै और बारह माह के तक़रीबन 25920 रुपै हुअे. अब किसी मय्यित पर 50 साल की नमाज़ें बाकी हैं तो इफ़दया अदा करने के लिये 1296000 रुपै भैरात करने होंगे. ज़ाहिर है

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

हर शप्स एतनी रकम भैरात करने की एस्तिताअत (ताकत) नहीं रभता, एस के लिये उ-लमाओे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام ने शर-ए हीला एशाद इरमाया है. म-सलन वोह 30 दिन की तमाम नमाजों के इदये की नियत से 2160 रुपै किसी इकीर (इकीर और भिस्कीन की ता'रीफ़ सइहा नम्बर 24 पर मुला-हजा इरमाएये) की भिल्क कर दे, येह 30 दिन की नमाजों का इदया अदा हो गया. अब वोह इकीर येह रकम देने वाले ही को डिबा कर दे (या'नी तोहके में दे दे) येह कब्जा करने के बा'द इर इकीर को 30 दिन की नमाजों के इदये की नियत से कब्जे में दे कर उस का माविक बना दे. एसी तरह लौट इेर करते रहें यूं सारी नमाजों का इदया अदा हो जाओगा. 30 दिन की रकम के जरीओे ही हीला करना शर्त नहीं वोह तो समजाने के लिये भिसाल दी है. भिलइर्ज 50 साल के इदयों की रकम भौजूद हो तो ओक ही बार लौट इेर करने में काम हो जाओगा. नीज इित्रे की रकम का हिसाब गेहूं के भौजूदा भाव से लगाना होगा. एसी तरह इी रोजा भी ओक स-द-कओे इित्र है. नमाजों का इदया अदा करने के बा'द रोजों का भी एसी तरीके से इदया अदा कर सकते हैं. गरीब व अभीर सत्मी इदये का हीला कर सकते हैं. अगर वु-रसा अपने भईमीन के लिये येह अमल करें तो येह मय्यित की जबर दस्त एमदाद होगी, एस तरह मरने वाला भी $لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ$ इर्ज के भोज से आजाद होगा और वु-रसा भी अजरो सवाब के मुस्तहिक होंगे. बा'ज लोग मस्जिद वगैरा में ओक कुरआने पाक का नुस्खा दे कर अपने मन को मना लेते हैं के उम ने भईम की तमाम नमाजों का इदया अदा कर दिया येह उन की गलत इहमी है. (तइसील के लिये देभिये : इतावा र-जविय्या

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तउकीक वोह बढ अप्त हो गया. (हिन)

मुभर्रज़, जि. 8, स. 167) याद रभिये ! मर्हूम की नमाजों का फ़िदया औलाद और दीगर वु-रसा की तरह कोई आम मुसल्मान भी दे सकता है.

(مُنْعَةُ الْخَالِقِ عَلَى التَّبَحُّرِ الرَّائِقِ لابن عابدين ج ٢ ص ١٦٠ مُلَخَّصًا)

मर्हूमा के फ़िदये का अेक मसअला

औरत की आदते हैज़ अगर मा'लूम हो तो उस कदर दिन और न मा'लूम हो तो हर महीने से तीन दिन नव बरस की उम्र से मुस्तस्ना करें मगर जितनी बार हम्ल रहा हो मुदते हम्ल के महीनों से अय्यामे हैज़ का इस्तिस्ना न करें. औरत की आदत दरबारअे निफ़ास अगर मा'लूम हो तो हर हम्ल के बा'द उतने दिन मुस्तस्ना करे और न मा'लूम हो तो कुछ नहीं, के निफ़ास के लिये जानिबे अकल (कम से कम) में शरअन कुछ तकदीर नहीं. मुम्किन है के अेक डी मिनट आ कर झौरन पाक हो जाअे. (मापूज़ अज़ इतावा र-अविय्या मुभर्रज़, जि. 8, स. 154)

सादाते किराम को नमाज़ का फ़िदया नहीं दे सकते

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से सय्यिदों और गैर मुस्लिमों को नमाज़ का फ़िदया देने के मु-तअद्लिक पूछा गया तो इरमाया : येह स-दका (या'नी नमाज़ का फ़िदया) हज़राते सादाते किराम के लाईक नहीं और हुनूद वगैरहुम कुफ़रारे हिन्द ईस स-दके के लाईक नहीं. इन दोनों को देने की अस्लन इजाज़त नहीं, न इन के दिये अदा हो. मुस्लिमीन मसाकीन अविल कुर्बा गैर हाशिमीन (या'नी अपने मिस्कीन मुस्लमान रिशतेदार गैर हाशिभियों) को देना दूना (या'नी दुगना) अज्ज है.

(इतावा र-अविय्या मुभर्रज़, जि. 8, स. 166)

इरमाने मुस्तक़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अदलाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (स्ल)

100 कोडों का हीला

हीलाअे शर-ई का जवाज कुरआनो हदीस और किंके ह-नफी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है. युनान्हे हजरते सय्यिहुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की भीमारी के जमाने में आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की जौजअे मोह-त-रमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا अक बार भिदमते सरापा अ-जमत में ताभीर से हाजिर हुई तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कसम भाई के “मैं तन्दुरुस्त हो कर सो कोडे माइंगा” सिद्धत याब होने पर अदलाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन्हें सो तीलियों की जाडू मारने का हुकम ईशाई इरमाया. (नूरुल ईरफ़ान, स. 728 मुलम्भसन) अदलाह तभा-र-क व तआला

पारह 23 सूअे ص की आयत नम्बर 44 में ईशाई इरमाता है :

وَحْدُ يَدَيْكَ ضَعْفًا ضَرْبُ ت-र-ज-मअे क-जुल ईमान : और
 ۞ وَلَا تَحْتِ بِه फ़ इरमाया के अपने हाथ में अक जाडू ले
 (प २३, व: ६६) कर इस से मार दे और कसम न तोड.

“आलमगीरी” में हीलों का अक मुस्तकिल बाब है जिस का नाम “किताबुल हियल” है युनान्हे आलमगीरी “किताबुल हियल” में है : जो हीला किसी का हक मारने या उस में शुभा पैदा करने या बातिल से इरेब देने के लिये किया जाअे वोह मकइह है और जो हीला इस लिये किया जाअे के आदमी हराम से बय जाअे या हलाल को हासिल कर ले वोह अय्यण है. इस किस्म के हीलों के जाईज होने की हलील अदलाह عَزَّ وَجَلَّ का येह इरमान है :

इरमाने मुस्तका : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शपस मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़रानی)

وَحُدِّ بِبَيْدِكَ ضِعْفًا قَاصِرٌ
بِهِ وَلَا تَحْتِطُ ۖ

(२३ प, २३: ६६)

तर-४-मअे कजुल ईमान : और
इरमाया के अपने हाथ में अेक जाडू ले
कर ईस से मार दे और कसम न तोड.

(عالمگیری ج ۶ ص ۳۹۰)

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

डीले के जवाज पर अेक और दलील मुला-हजा इरमाईये युनान्ये
हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ईब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत
है के अेक बार हजरते सय्यि-दतुना सारह और हजरते सय्यि-दतुना
हाजिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا में कुछ यप-कलश हो गई. हजरते सय्यि-दतुना
सारह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कसम भाई के मुजे अगर काबू मिला तो मैं
हाजिरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का कोई उज़्व काटूंगी. अब्दुल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हजरते
सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को हजरते सय्यिदुना ईब्राहीम
भलीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की पिदमत में भेजा के ईन में सुलह
करवा दें. हजरते सय्यि-दतुना सारह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज की :
“مَا حِيلَةٌ يَمِينِي؟” या’नी मेरी कसम का क्या डीला होगा ? तो हजरते
सय्यिदुना ईब्राहीम भलीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर वल्य
नाज़िल हुई के (हजरते) सारह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) को हुकम दो के वोह
(हजरते) हाजिरा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) के कान छेद दें. उसी वकत से औरतों
के कान छेदने का रवाज पडा.

(عَمْرُؤُوعِيون البصائر لِلْحَمَوِي ج ۳ ص ۲۹۵)

इरमाने मुस्तक़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदह पाक न पढा तलक़ीक़ वोह बद् अफ्त हो गया. (अहं)

गाय के गोशत का तोहफ़ा

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आ'ईशा सिदीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है के दो जहान के सुल्तान, सरवरे जीशान क़िसी ने अर्ज़ की : येह गोशत हज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर स-दका हुआ था. इरमाया : هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلِنَا هَدِيَّةٌ يا'नी येह बरीरा के लिये स-दका था हमारे लिये हदिय्या है. (मुस्लिम स ५६१ हदियथ १०७०)

जकात का शर-ई हीला




ईस हदीसे पाक से साफ़ जाहिर है के हज़रते सय्यि-दतुना बरीरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जो के स-दके की हकदार थीं उन को बतौरे स-दका मिला हुआ गाय का गोशत अगर्चे उन के हक में स-दका ही था मगर उन के कब्ज़ा कर लेने के बा'द जब बारगाहे रिसालत में पेश किया गया था तो उस का हुकम बदल गया था और अब वोह स-दका न रहा था. यूं ही कोई मुस्तहिक शप्स जकात अपने कब्ज़े में लेने के बा'द किसी भी आदमी को तोड़फ़तन दे सकता या मस्जिद वगैरा के लिये पेश कर सकता है के मजकूरा मुस्तहिक शप्स का पेश करना अब जकात न रहा, हदिय्या या अतिय्या हो गया. हु-क़दाओ किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जकात का शर-ई हीला करने का तरीका यूं ईशा'द इरमाते हैं : जकात की रकम मुर्दों की तजहजीजो तक़्ज़ीन या मस्जिद की ता'मीर में सर्फ़ नही कर सकते के तम्बीके इकीर (या'नी इकीर को मालिक करना) न पाई गई. अगर इन

करमाने मुस्तका عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा
 (उसे डियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (अ. 1/10))

उमूर में भर्य करना याहें तो इस का तरीका येह है के इकीर को (जकात की रकम का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वगैरा में) सई करे, इस तरह सवाब दोनों को होगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 890)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! कइ न दइ न बढके ता'मीरे मस्जिद में भी डीलअे शर-ई के जरीअे जकात इस्ति'माल की जा सकती है क्यूंके जकात तो इकीर के हक में थी जब इकीर ने कजा कर लिया तो अब वोह मालिक हो युका, जो याहे करे. डीलअे शर-ई की ब-र-कत से देने वाले की जकात भी अदा हो गई और इकीर भी मस्जिद में दे कर सवाब का हकदार हो गया. इकीरे शर-ई को डीले का मस्जला बेशक समजा दिया जाअे.

इकीर की ता'रीफ

इकीर वोह है के  जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो के निसाब को पड़ोय जाअे या  निसाब की कदर तो हो मगर उस की हाजते अस्विय्या (या'नी जइरिय्याते जिन्दगी) में मुस्तगरक (धिरा हुवा) हो. म-सलन रहने का मकान, पानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या स्कूटर या कार), कारीगरों के औजार, पहनने के कपडे, बिदमत के लिये लौंडी, गुलाम, इल्मी शुगल रहने वाले के लिये इस्लामी किताबें जो उस की जरूरत से जाईद न हों  इसी तरह अगर मइयून (या'नी मकइज) है और दैन (या'नी कजा) निकालने के बा'द निसाब बाकी न रहे तो इकीर है अगर्थे उस के पास अेक तो क्या कई निसाबें हों.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 924, رَدُّ الْمُنْحَارِجِ ۳ ص ۳۳۳ و غیره)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : علی اللہ تعالیٰ غلبوا البوسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैराज़त)

મિસ્કીન કી તા'રીફ

મિસ્કીન વોહ હૈ જિસ કે પાસ કુછ ન હો. યહાં તક કે ખાને ઓર બદન છુપાને કે લિયે ઈસ કા મોહતાજ હૈ કે લોગોં સે સુવાલ કરે ઓર ઈસે સુવાલ હલાલ હૈ. ફકીર (યા'ની જિસ કે પાસ કમ અઝ કમ એક દિન કા ખાને કે લિયે ઓર પહનને કે લિયે મૌજૂદ હૈ ઉસ) કો બિગૈર ઝરૂરત વ મજબૂરી સુવાલ હરામ હૈ.

(1118-1117) عالمگیری ج 1, ص 924, બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 924)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! મા'લૂમ હુવા જો ભિકારી કમાને પર કાદિર હોને કે બા વુજૂદ બિલા ઝરૂરત વ મજબૂરી બતૌરે પેશા ભીક માંગતે હૈં ગુનાહગાર વ અઝાબે નાર કે હકદાર હૈં ઓર જો એસોં કે હાલ સે બા ખબર હો ઉસે ઉન કો દેના જાઈઝ નહીં.



ગમે મદીના, બકીઅ,
મફિરત ઓર બે
હિસાબ જન્નતુલ
ફિરદૌસ મેં આકા
કે પડોસ કા તાલિબ



યકુમ મુહર્રમુલ હરામ 1435 સિ.હિ.

06-11-2013

યેહ રિસાલા પઢ કર દુસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઓર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કર્દા રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેફ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેફ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શફાઅત કરૂંગા. (કુરઆન)

ફેહરિસ

ઉન્વાન	સફલા	ઉન્વાન	સફલા
દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત	1	કઝાએ ઉમ્રી કા તરીકા (હ-નફી)	12
જહન્નમ કી ખૌફનાક વાદી	2	નમાઝે કસ્ર કી કઝા	13
પહાડ ગરમી સે પિઘલ જાએ	2	ઝમાનએ ઈરતિદાદ કી નમાઝોં	14
સર કુચલને કી સઝા	2	બચ્ચે કી પૈદાઈશ કે વક્ત નમાઝ	14
હઝારોં બરસ કે અઝાબ કા હકદાર	3	મરીઝ કો નમાઝ કબ મુઆફ હૈ ?	14
કબ્ર મેં આગ કે શો'લે	4	ઉમ્ર ભર કી નમાઝોં દોબારા પઢના	14
અગર નમાઝ પઢના ભૂલ જાએ તો..?	4	કઝા કા લફઝ કહના ભૂલ ગયા તો ?	15
ઈત્તિફાકન આંખ ન ખુલી તો...?	5	કઝા નમાઝોં નવાફિલ કી અદાએગી સે બેહતર	15
મજબૂરી મેં અદા કા સવાબ મલેગા યા નહીં ?	5	ફજ વ અસ્ર કે બા'દ નવાફિલ નહીં પઢ સકતે	15
રાત કે આખિરી હિસ્સે મેં સોના કેસા ?	6	ઝોહર કી ચાર સુન્નતેં રહ જાએ તો કયા કરે ?	16
રાત દેર તક જાગના	6	ફજ કી સુન્નતેં રહ જાએ તો કયા કરે ?	16
અદા, કઝા ઔર વાજિબલ ઈઆદા કી તા'રીફ	7	કયા મગરિબ કા વક્ત થોડા સા હોતા હૈ ?	17
તૌબા કે તીન રુકન હેં	8	તરાવીહ કી કઝા કા કયા હુકમ હૈ ?	18
સોતે કો નમાઝ કે લિયે જાગના વાજિબ હૈ	8	નમાઝ કા ફિદયા	18
ફજ કા વક્ત હો ગયા ઉઢો !	8	મર્હૂમા કે ફિદયે કા એક મસ્અલા	20
હિકાયત	9	સાદાતે કિરામ કો નમાઝ કા ફિદયા નહીં દે સકતે	20
હુકૂકે આમ્મા કે એહસાસ કી હિકાયત	10	૧૦૦ કોઠોં કા હીલા	21
જહ્દ સે જહ્દ કઝા પઢ લીજિયે	11	કાન છેદને કા રવાજ કબ સે હુવા ?	22
છુપ કર કઝા પઢિયે	11	ગાય કે ગોશત કા તોહફા	23
જુમુઅતુલ વદાઅ મેં કઝાએ ઉમ્રી	11	ઝકાત કા શર-ઈ હીલા	23
ઉમ્ર ભર કી કઝા કા હિસાબ	12	ફકીર કી તા'રીફ	24
કઝા પઢને મેં તરતીબ	12	મિસ્કીન કી તા'રીફ	25

قرمانے مستکما صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : جس نے میں پر دس مرتباً دُرُودِ پاک پڑھا اے اللہ! اس پر سے رزق مہینے میں نازل فرماتا ہے۔ (ترمذی)

مآخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
پشاور	کتاب الکبائر	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن مجید
دار المعرفہ بیروت	تذویر الابصار	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	غزوات العرفان
دار المعرفہ بیروت	در مختار و رد المحتار	غیر بھائی چھٹی مرکز الاولیاء لاہور	نور العرفان
کوئٹہ	مشہد اہل حق علی البحر اراق	دار الکتب العلمیہ بیروت	بخاری
دار الفکر بیروت	عالمگیری	دار ابن حزم بیروت	مسلم
باب المدینہ کراچی	غزویون البصائر	دار الکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار الکتب العلمیہ بیروت	الجامع الصغیر
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار صادر بیروت	احیاء العلوم

نامہ ریسالہ : کذا نمازوں کا तरीکا

پہلی بار : جُمادیلِ اخیر 1435 ھ. اپریل 2014 ھ.

تا'داع : 20,000

ناشر : مکتبہ تہذیبیہ مہدینا

مذہب : کسی اور کو یہ ریسالہ لپانے کی ہجرت نہی ہے۔

کتاب کے ہریدار متوجہ ہوں

کتاب کی تہذیب میں نوماہا ہراہی ہو یا سڈھات کم ہوں یا ہاٹنڈگ میں آگے پیٹھ ہو گئے ہوں تو مکتبہ تہذیبیہ مہدینا سے رجوہ فرماہے۔

मोटे मोटे सांप

रिवायत में है : कियामत के दिन सभ से पहले नमाज छोड़ने वालों के चेहरे सियाह होंगे और जहन्नम में अेक वादी है जिसे **लमलम** कहा जाता है, उस में ठीट की गरदन की तरह **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई अेक माह की मसाफत के बराबर है. जब येह सांप नमाज न पढने वाले को उसेगा तो उस का जहूर उस के जिस्म में **70** साल तक ज़ेश मारता रहेगा.

(الأولاد 1/399)



मड-त-तुल मदीना

दा'वते ईस्लामी

सिबेकडेड हाउस, अलिक की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा, अहमदशाह-1 गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 88200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net